डॉ. मीरा कुमारी
संस्कृत विभाग, सी. एम. जे. कॉलेज, खुटौना
ललित नारायण मिथिला विश्विद्यालय, दरभंगा, बिहार
ईमेल आइडी - kmeera573@gmail.com
मोबाइल नंबर- 6287538352

वर्ग- बीए पार्ट 2 (H) दिनांक - 27-05-2020

विषय- संस्कृत (भारतीय दर्शन)

प्रश्न- भारतीय दर्शनों का विकास उपनिषदों में बीज रूप से निहित तथा व्यक्त रूप से प्रतिपादित सिद्धांतों को लेकर कैसे हुआ एवं षड् दर्शनों की उत्पत्ति कैसे हुई?

उत्तर -भारतीय दर्शनों का विकास उपनिषदों में बीज रूप से निहित तथा व्यक्त रूप से प्रतिपादित सिद्धांतों को लेकर हुआ है। हमारी दृष्टि से हमारे षड्दर्शनों के विकास का यह प्रकार है। औपनिषद् तत्वज्ञान का पर्यवसान 'तत् तत्वमसि' मंत्र में था।इस मंत्र के द्वारा वैदिक ऋषियों का यह गंभीर शंख घोष है कि तत् तथा त्वं- ब्रह्म तथा जीव- की नितांत एकता है ।समष्टि में जो तत् है,वह व्यष्टि में त्वं' है।'अद्वेत तत्व' धर्म के साक्षात्कार करने वाले वैदिक ऋषयों की दार्शनिक संसार के लिए महान देन है।प्रातिभ -ज्ञान से उसकी स्फुरण पहले हुई, तर्क से उसकी प्रतिष्ठा पीछे सिद्ध की गई। इसी तत्व को हृदयंगम करने के लिए दर्शन विकसित हुए। उपनिषद के पश्चाद्ववर्ती युग के सामने यही विषम समस्या थी कि इस तथ्य का साक्षात्कार किस प्रकार किया जाए। कतिपय दार्शनिक लोग कहने लगे कि विभिन्न गुण वाले जीव और भौतिक जगत्- पुरुष तथा प्रकृति- के गुणों के ठीक- ठीक न जानने से ही यह संसार है।प्रकृति-पुरुष के यथार्थ स्वरूप के ज्ञान से तत्तत्व की एकता सिद्ध होती है।अनात्म ख्याति से भेद तथा सम्यक् ख्याति (सम्यक ज्ञान)से अभेद है ।इस संप्रदाय का नाम हुआ सम्यक् ख्यादि अर्थात् सांख्य।यह बौद्धिक साक्षात्कार हुआ।परंतु इससे काम चलता न देख उसे व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्ष करने की आवश्यकता प्रतीत होने लगी। इस आवश्यकता की पूर्ति ध्यान-धारणा की व्यवस्था करने वाले 'योग' से हुई।इस प्रकार सांख्य और योग एक ही तत्वज्ञान के दो पक्ष है। बौद्धिक पक्ष का नाम है सांख्य और व्यवहार पक्ष का अभिधान योग है ।कालांतर में जीव -जगत् के यथार्थ रूप को जानने के लिए उनके गुणों की छानबीन करना आवश्यक प्रतीत होने लगा। इस प्रकार आत्मा आनात्मा के गुण -विवेचन के लिए -अर्थात उनकी विशिष्टता जानने के लिए 'वैशेषिक' की उत्पत्ति हुई।परंतु ज्ञान -प्राप्ति की परिष्कृत पद्धति के अभाव में यह विवेचन सुचारु रुप से सम्पन्न नहीं हो सकता।अत:ज्ञान की शास्त्रीय पद्धति के निरूपण के लिए 'न्याय' का जन्म हुआ।न्याय शुष्क तर्क वादी है। अनेक विद्वानों की दृष्टि में केवल तर्क से अध्यात्म का ज्ञान हो नहीं सकता और इसलिए उन्होंने श्रुति की और अपनी दृष्टि डाली।'श्रुति की ओर लौटो' इस सिद्धांत का प्रचार होने लगा। दार्शनिको ने वेद के पूर्वकाण्ड(कर्म-काण्ड)की विवेचना करना आरंभ कर दिया और इसी विवेचन का परिणाम हुआ कर्म मीमांसा का उदय।परंतु इस दर्शन के विशेष अनुशीलन ने व्यक्त कर दिया कि मानवों की आध्यात्मिक प्रवृत्तियों केवल कर्म की उपासना से तृप्त नहीं हो सकती।अतः उत्तरकांड (ज्ञान कांड) की मीमांसा होने लगी और इसी का पर्यवसान 'वेदान्त'में हुआ।इस प्रकार

औपनिषद् 'तत्वमसि' महावाक्य की यथार्थ व्याख्या करने के लिए इस क्रम से षड्दर्शनों की उत्पत्ति हुई- सांख्य और योग, विशेषिक तथा न्याय ,कर्म- मीमांसा तथा वेदांत।